श्री गणेशाय नमः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ

Hindu Heritage Society Inc, Australia

हिन्दु संस्कृति संध इन्क, ओस्ट्रेलिया

द्वारा प्रकाशित

Shri Panchdev Pujan Vidhi

श्री पञ्चदेव पूजन विधि

Daily Prayer for everyone

दैनिक पूजा एवं अर्चना

विषय सूची

		पृष्ठ
१॥	प्रार्थना की आवश्यकता तथा उसका महत्व ॥	६
२॥	प्रातः स्मरण एवं संध्या	१०
३॥	पञ्च महायज्ञ	२०
४॥	मानस-पूजा	२३
५॥	दैनिक पूजा तथा अर्चना	२६
६॥	पञ्चदेव पूजन	२७
७॥	गणेश पूजा तथा स्तुति	३२
८॥	विष्णु पूजा तथा स्तुति	४०
९॥	शिव पूजा तथा स्तुति	४३
१०॥	दुर्गा पूजा तथा स्तुति	४५
११॥	सूर्य पूजा तथा स्तुति	४८
१२॥	भजन - मैं तो तेरा दास प्रभु	५०
१३॥	सायङ्कालीन संध्या	५०
१४॥	आरतीयाँ	५४
१५॥	क्षमा-प्रार्थना एवं शान्ति-पाठ	५९
१६॥	हिन्दु हेरिटेज सोसाइटी : एक परिचय	६३
१७॥	पञ्चदेव पूजन - विशेष जानकारी	६६

प्राक्कथन (PREFACE)

हिन्दु धर्म को समुद्र की संज्ञा दी जाती है। इस अगाध समुद्र मे विभिन्न ओर से समय समय पर अनेक प्रकार के सम्प्रदाय नदियों की तरह मिलते रहे हैं। लेकिन मुख्य रुप से पाँच ही प्रमुख सम्प्रदाय माने जाते हैं।

ये हैं वैष्णव सम्प्रदाय; शैव सम्प्रदाय; शाक्त सम्प्रदाय; सौर एवं गाणपत्य सम्प्रदाय॥ इन्ही बड़ी शाखाओं से अनेक उप शाखाओं ने कालान्तर में जन्म लिया और आज भी ले रही हैं।

कहा जाता है कि हिन्दु धर्म एक विशाल वृक्ष के समान है जिस की हरी भरी शाखायें चारों ओर फैली हुयीं हैं लेकिन जिस का मूल है नित्य उपासन अथवा नित्य संध्या। यदि नित्य उपासना ही न रही तो इस धर्म वृक्ष को सूखने में बहुत समय नहीं लगेगा। हमारे ऋषियों का कहना है कि "**धर्मो रक्षति रक्षितः** " - अर्थात यदि हम अपने धर्म की रक्षा करेंगे तो धर्म हमारी रक्षा करेगा ॥

संध्या शब्द संधी से बना हुआ है। जिस का अर्थ होता है जोड़। रात एवं दिन का जोड़। सूर्य एवं चाँद के कारण रात दिन होते हैं और जहाँ रात और प्रभात का मिलन होता है वही संध्या काल कहा गया है। इस समय मन की स्थिति अस्थिर और लचीली होती है अतः मन को एकाग्र करने में बहुत परिश्रम नही करना पड़ता।

पिछले अनेक वर्षों से लोगों का आग्रह था कि कोइ एक सरल नित्य पूजा की विधि होनी चाहिये जिससे सर्व साधारण भी लाभ उठा सकें। इसी भाव से प्रेरित होकर

इस दिशा मे काम करने का अवसर प्राप्त हुआ। पिछले वर्षों मे हिन्दु हेरिटेज सोसाइटी के द्वारा निम्न लिखित पुस्तिकाओं का प्रकाशन हुआ है।

- हमारे ऋषि मुनी
- हिन्दु धर्म प्रश्नोत्तरी
- सत्य नारायण व्रत कथा
- सरल भजनावली

भगवत कृपा से इस वर्ष गुरु पूर्णिमा के अवसर पर यह दैनिक पूजा एवं अर्चना आप के हाथ में है। इस कार्य को पूर्ण करने में हमे श्री पण्डित जगदीश महाराज जी एवं श्रीमति डाक्टर मिनाक्षी जी का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

पण्डित जगदीश महाराज एवं उनका सम्पूर्ण परिवार हिन्दु हेरिटेज सोसाइटी के सभी कार्यों के लिये सदैव समर्पित रहता है। आप के सहयोग के बिना हिन्दी में टाइप करना सम्भव न होता।

डाक्टर मिनाक्षी कार्तिकेयन संस्कृत भाषा की परम विदुषी हैं। आप ने संस्कृत में पी एच डी की उपाधि प्राप्त कर अनेक वर्षों से संस्कृत के पठन पाठन मे अपना जीवन समर्पित कर दिया है। जबसे आप ने सिडनी मे रहना प्रारम्भ किया तभी से सिडनी संस्कृत पाठशाला के माध्यम से निरन्तर बच्चों एवं बड़ों को संस्कृत शिक्षा दे रही हैं। हिन्दु हेरिटेज सोसाइटी आप के इस कार्य की सराहना करती है॥

धर्मप्राण लाला तोता राम जी का नाम फीजी देश मे अपरिचित नही है। उन्ही के

सुपुत्र श्री पदम लाला एवं श्रीमति गायत्री लाला जी की सद प्रेरणा से उन के तीनो पुत्रों द्वारा इस पुस्तिका के प्रकाशन का भार लिया गया है।

हिन्दु हेरिटेज सोसाइटी श्री राजेश्वर एवं शैलेश्नी लाला; बिनेश्वर एवं भारती लाला तथा दिनेश्वर एवं मौरीन लाला की अत्यन्त आभारी है और आशा करती है कि भविष्य में भी इसी तरह सहयोग करते रहेंगे॥

हमारा प्रयास है कि इस पुस्तिका की सी डी तथा अग्रेजी अनुवाद यथा शीघ्र आप की सेवा मे उपलब्ध हो जिससे अधिक से अधिक लोग इससे लाभ ले सकें॥

अन्त मे हमारा पूर्ण विश्वास है कि आप इस प्रकाशन से भरपूर लाभ लेंगे॥

Pdt. Narayan Bhatt,(Shastri)

Purohit, Kirtan & Kathakar,
Registered Marriage Celebrant,
Medley Avenue
Liverpool, NSW, 2170, Australia
Phone: +61 (0) 2 9600 7815. *Mobile: + 61 (0) 430 338 770.*
e-mail (1): punditji01@yahoo.com.au

Pdt.Jagdish Maharaj(J.P.)

Justice of the Peace (NSW),
Authorised Marriage Celebrant,
Secretary, Hindu Heritage Society,
V.P.- Sanatan Dharm Brahman Purohit Maha Sabha.
Sydney, Australia.
Phone: + 61 (0) 2 9896 5156. *Mobile: +61 (0) 412 931 965.*

Dr. Meena Srinivasan

Principal: Sydney Sanskrit School.

PO Box 417, NSW 1871. *Mobile: +61 (0) 423 457 343.*

Shri Panchdev Pujan Vidhi

श्री पञ्चदेव पूजन विधि

Daily Prayer for everyone

दैनिक-पूजा एवं अर्चना

॥ ॐ श्री गणेशाय नमः ॥

सदा भवानी दाहिने सन्मुख रहे गणेश। पञ्चदेव रक्षा करें शङ्कर विष्णु दिनेश॥

धनानि भूमौ पशवश्च गोष्ठे, नारी गृहद्वारि जना श्मशाने।

देहश्चितायां परलोक मार्गे, धर्मानुगो गच्छति जीव एकः॥

धन और सम्पति का साथ केवल मकान तक।

प्रिय नारी और बन्धु चले केवल श्मशान तक ।

शरीर भी साथ देता केवल अग्नि दाह तक ।

धर्म एक साथ रहता परलोक मार्ग पर ।

॥ प्रार्थना की आवश्यकता तथा उसका महत्व ॥

हिन्दु परम्परा में दैनिक प्रार्थना अथवा संध्या को विशेष महत्व दिया गया है। प्रातः ब्रह्म मुहुर्त में जागरण के उपरान्त व्यक्ति को छः कर्म नित्य करने का आदेश हमारे ऋषियों ने दिया है।

संध्या स्नानं जपश्चैव देवतानां च पूजनम्।

वैश्वदेव तथाऽतिथ्यं षट् कर्माणि दिने दिने॥

अर्थात संध्या, स्नान, जप, देव पूजन, बलि वैश्वदेव और अतिथि सत्कार, ये छः कर्म प्रत्येक गृहस्थ को नित्य करने का आदेश है। तैतरीय संहिता में लिखा है कि व्यक्ति पैदा होते ही तीन ऋणों से बंध जाता है। ये तीन ऋण हैं - देव ऋण, पित्र ऋण, एवं ऋषि ऋण। देव ऋण इस लिय कि हम प्रकृति के श्रोतों का उपयोग करते हैं। पित्र ऋण इस लिय कि हमें संसार में हमारे पूर्वजों ने नाम, धाम, एवं सम्मान के योग्य बनाया हैं। ऋषि ऋण इस लिये कि ऋषियों के द्वारा हम जीवन में भौतिक तथा आध्यात्मिक उन्नति कर पाते हैं। अतः व्यक्ति इन तीन ऋणों से सदैव ऋणी रहता है। इन ऋणों के दोषों से वही व्यक्ति बचपाते हैं, जो निरन्तर देवकार्य करते रहते है जैसे नित्यकर्म आदि। जो अपने पारिवारिक आदर्शों को बनाये रखता है तथा अपने माता, पिता, तथा परिवार के बड़े लोगों की सेवा करता है, वह पितृऋण से मुक्त हो पाता है । तथा जो व्यक्ति अपने धर्म का पालन, उसका प्रचार, स्वाध्याय, इत्यादि करता है वह व्यक्ति ऋषिऋण से मुक्त हो जाता है। जो इन ऋणों से लदा हुआ यूँ ही जीवन समाप्त करता है वह मुक्ति का अधिकारी नही बन पाता है।

मनुस्मृति में कहा गया कि स्वाध्याय एवं विद्यादान ही ब्रह्मयज्ञ है, तर्पण ही पितृयज्ञ है, हवन ही देवयज्ञ है, पञ्चबलि ही भूतयज्ञ है, एवं अतिथि का स्वागत ही मनुष्ययज्ञ है। यही एक सद् गृहस्थ का अनिवार्य कर्म है। स्नान से शरीर शुद्धि तथा जप से मानसिक शुद्धि करने के पश्चात नित्यकर्म, देवपूजन करना चाहिए। भोजन से पूर्व पञ्चबलि का नियम बताया गया है। अर्थात हम भोजन करें उससे पूर्व सम्भव हो तो बलि वैश्वदेव की पूर्ण क्रिया करनी चाहिये अन्यथापाँच ग्रास निकाल कर भोजन करने

की परम्परा है। घर आये अतिथि की सेवा तथा भगवान को भोग लगाने के पश्चात स्वयं भोजन करना चाहिये॥ ईशोपनिषद में कहा गया है कि – **तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः** अर्थात संसार परमात्मा की देन है, इस लिये इस संसार में जो भी उपलव्धी हो उसका उपयोग त्याग पूर्वक करें। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने भी यही बात स्पष्ट की है॥

प्रातः काल व्यक्ति की प्रकृति सात्विक रहती है। सात्विक प्रकृति से ही दान, पूजा, हवन, का सात्विक फल प्राप्त होता है। सात्विक भाव ही शान्ति की ओर ले जाता है। अखण्ड शान्ति मानव जीवन का लक्ष्य है। हिन्दु परम्परा में उपासना के अनेक प्रकार हैं। निर्गुण निराकार परमात्मा के उपासक जहाँ योग, ध्यान, स्वाध्याय, तथा जप, से अपने को परमात्मा से जोड़ते हैं वहीं सगुण साकार के उपासक भी कर्मकाण्ड का अवलम्बन कर शास्त्र बधि से उसे पूजते हैं।

उपासना के चार ही प्रमुख मार्ग बताये गये हैं। ज्ञानमार्ग, भक्तिमार्ग, कर्ममार्ग और योगमार्ग॥ ज्ञानी तत्व को समझ कर क्रिया करता है। भक्त समर्पण के भाव का अवलम्वन कर सर्वस्व परमात्मा को समर्पित कर देता है। योगी यम नियमों के माध्यम से आत्मा एवं परमात्मा का समन्वय करता है। जब कि कर्म योगी शुद्ध, सात्विक, कर्म का फल, परमात्मा को समर्पित कर देता है।

अनादि काल से ही सगुण साकार परमात्मा के उपासक **पञ्चदेव** उपासना करते आये हैं। यूँ तो इन पाँच शक्ति केन्द्रों के अन्तर्गत सभी शक्तियों का समावेश हो ही जाता है तथापि, सनातन धर्मावलम्बी को पञ्चदेव पूजन के साथ साथ अपने इष्ट देव का पूजन करने की छूट है।

॥ नित्य कर्म ॥

सूर्योदय से प्रायः १ घण्टा पहले ब्रह्ममुहूर्त होता है। शास्त्रों मे इस समय सोना निषिद्ध है। इस कारण ब्रह्ममुहूर्त में उठ कर मुख शुद्धि कर नीचे लिखा मन्त्र बोलते हुवे अपने हाथों का दर्शन करें॥

॥ करावलोकन ॥

प्रातः स्मरण शय्या पर भी किया जा सकता है॥

कराग्रे वसते लक्ष्मी, करमध्ये सरस्वती।
करमूले स्थितो देवः प्रभाते करदर्शनम्॥

अर्थः *मैं प्रातःकाल हाथेलि के अग्रभाग मे माता लक्ष्मी का, हथेलि के मध्यभाग में माता सरस्वती का, एवं हथेलि के मूलभाग मे* ***मेरे इष्ट देव का दर्शन करता हूँ॥***

॥ भूमि वन्दना ॥

शय्या से उठ कर पृथ्वी पर पैर रखने से पूर्व पृथ्वी माता का अभिवादन करें, और उन पर पैर रखने की विवशता के लिये उनसे क्षमा माँगते हुए निम्न श्लोक का पाठ करें॥

समुद्र वसने देवी, पर्वत स्तन मण्डले।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं, पादस्पर्शं क्षमस्व मे॥

हे विष्णुपत्नि, हे समुद्र रुपी वस्त्रों को धारण करने वाली, तथा पर्वत रुपी स्तनों से युक्त पृथ्वी देवी तुम्हें नमस्कार है। मेरे पादस्पर्श को क्षमा कीजिये॥ इसके बाद निम्न लिखित मन्त्र को पढ़ें।

हे जिह्वे रस सारज्ञे, सर्वदा मधुर प्रिये।
नारायणाख्य पीयूषं , पिब जिह्वे निरन्तरम्॥

हे रस के महत्व को जानने वाली, तथा सदैव मधुर-प्रिय मेरी ज़िह्वा, तू सदैव नारायण के नाम का अमृत पान करना ।

इस के उपरान्त अपनी नित्य क्रिया करें। स्नान आदि के द्वारा शरीर को पवित्र करें। आसन प्राणायाम के द्वारा मन को एकाग्र करें।

॥ प्रातः स्मरण ॥

॥ श्री गणेश स्मरण ॥

प्रातः स्मरामि गणनाथमनाथ बन्धुं। सिन्दूर पूरपरिशोभित गण्डयुग्मम्॥
उद्दण्ड विघ्न परिखण्डन चण्डदण्डं। आखण्डलादि-सुरनायक वृन्द वन्द्यम्॥

अनाथों के बन्धु, सिन्दूर से शोभायमान दोनों कपोल वाले, प्रबल विघ्न का नाश करने में समर्थ, एवं इन्द्रादि देवों से नमस्कृत भगवान श्री गणेश जी का मैं प्रातः स्मरण करता हूँ॥

॥ श्री विष्णु स्मरण ॥

प्रातः स्मरामि भवभीतिमहार्तिं नाशं । नारायणं गरुड़ वाहनमब्जनाभम् ॥
ग्राहाभिभूतवरवारण मुक्तिहेतुं । चक्रायुधं तरुण वारिज पत्रनेत्रम् ॥

संसार के भयरुपी महान् दुःख को नाश करने वाले, ग्राह से गजराज को मुक्त करने वाले, चक्रधारी, पद्मनाभ, एवं कमलपत्र के समान नेत्र वाले, गरुड़ वाहन, भगवान श्री नारायण का मैं प्रातः स्मरण करता हूँ ॥

त्रैलोक्य चैतन्यमयादिदेव । श्रीनाथ विष्णो भवदाज्ञयैव ।
प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थं संसार यात्रामनुवर्तयिष्ये ॥

हे श्रीनाथ ! आपकी यह भी आज्ञा है कि काम करने के साथ साथ मैं आपका स्मरण करता रहूँ । तदनुसार यथा सम्भव आपका स्मरण करता हुआ और नाम लेता हुआ काम करता रहूँगा तथा उन्हें आप को समर्पित भी करता रहूँगा । इस कर्म रुप पूजा से आप प्रसन्न हों ।

॥ श्री शिव स्मरण ॥

प्रातः स्मरामि भवभीति हरं सुरेशं । गङ्गाधरं वृषभ वाहन मम्बिकेशम् ॥
खट्वाङ्ग शूल वरदाभय हस्तमीशं । संसार रोगहर मौषधमद्वितीयम् ॥

संसार के भय को नाश करने वाले, देवेश गंगाधर, वृषभ वाहन, पार्वती पति, हाथ में खट्वांग एवं त्रिशूल लिये और संसार रुपी रोग को नाश करने के लिये अद्वितीय औषध स्वरुप, भगवान श्री शिव का मैं प्रातः स्मरण करता हूँ॥

॥ श्री देवी स्मरण ॥

प्रातः स्मरामि भजतां अभिलाष दात्रीं,धात्रीं समस्त जगतां दुरितापहन्त्रीम्।
संसार बन्धन विमोचन हेतु भूतां, मायां परां समधिगम्य परस्य विष्णोः॥

मैं प्रातः काल भक्तों की अभिलाषा पूर्ण करने वाली, समस्त जगत् का पालन करने वाली, पाप का नाश करने वाली, संसारिक बन्धन से मुक्तकरने वाली, प्रधान देव श्री विष्णु की माया स्वरुपा भगवती का मैं स्मरण करता हूँ॥

प्रातः स्मरामि शरदिन्दु करोज्ज्वलाभां। सद्रत्नवन्मकरकुण्डल हारभूषाम्॥
दिव्यायुधोर्जित सुनील सहस्त्र हस्तां। रक्तोत्पलाभ चरणां भवतीं परेशाम्॥

शरत्कालीन चन्द्रमा के समान उज्जवल आभा वाली, उत्तम रत्नों से जटित मकर कुण्डलों तथा हारों से सुशोभित दिव्यायुधों से दीप्त सुन्दर नीले हजारों हाथों वाली, लाल कमल की आभा युक्त चरणों वाली, भगवती दुर्गा देवी का मैं प्रातः काल स्मरण करता हूँ॥

॥ श्री सूर्य स्मरण ॥

प्रातः स्मरामि खलु तत्सवितुर्वरेण्यं। रुपं हि मण्डलमृचोऽथ तनुर्यजूंषि ॥
सामानि यस्य किरणाः प्रभवादि हेतुं ब्रह्मा हरात्मकमलक्ष्यमचिन्त्य रुपम् ॥

सूर्य का वह प्रशस्त रुप जिसका मण्डल ऋग्वेद, कलेवर यजुर्वेद, तथा किरणें सामवेद हैं। जो सृष्टि आदि के कारण हैं, ब्रह्मा और शिव जी के स्वरुप हैं, तथा जिन का रुप अचिन्त्य और अलक्ष्य हैं, प्रातःकाल मैं उनका स्मरण करता हूँ ॥

॥ त्रिदेवों के साथ नवग्रह स्मरण ॥

ब्रह्मा मुरारिः त्रिपुरान्तकारी, भानु शशिः भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम् ॥

ब्रह्मा विष्णु शिव सूर्य चन्द्रमा मंगल बुध बृहस्पति शुक्र शनि राहु केतु ये सभी मेरे प्रातः काल को मंगलमय करें ॥

॥ त्रिकाल संध्या ॥

प्रातः संध्यां सनक्षत्रां मध्याह्ने मध्य भस्कराम्।
ससूर्यां पश्चिमां सन्ध्यां तिस्त्रः सन्ध्या उपासते ॥

प्रातः काल में तारों के रहते हुए, मध्यान्ह काल में जब सूर्य आकाश के मध्य में हो, एवं सायंकाल में सूर्यास्त के पहले ही संध्या करनी चाहिये।

जपन्नासीत् सावित्रीं प्रत्यगातार कोदयात्।

संध्यां प्राक् छतरेवं हि तिष्ठेदा सूर्य दर्शनात्।

सायंकाल में पश्चिम की तरफ मुख करके तब तक जप करते रहें जब तक तारों का उदय न हो और प्रातः काल पूर्व की ओर मुख करके तब तक जप करते रहें जबतक सूर्य का दर्शन न हो।

॥ संध्या न करने से दोष ॥

संध्या येन न विज्ञाता संध्या येनानुपासिता।

जीवमानो भवेच्छूद्रो मृतः श्वाचाभि जायते॥

जिसे संध्या का ज्ञान न होकर संध्या की उपासना नहीं की, वह द्विज जीवित रहते शूद्र सम रहता है और मृत्यु के बाद कुत्ते आदि की योनि को प्राप्त करता है।

संध्या हीनोऽशुचिर्नित्यमनर्हः सर्वकर्मसु।

यदन्यत् कुरुते कर्म न तस्य फल भाग्भवेत्॥

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य आदि संध्या नहीं करें तो वे अपवित्र हैं और उन्हें किसी पुण्य कर्म के करने का फल नहीं होता।

॥ संध्या विधि ॥ षट्कर्म ॥

॥ पृथ्वी पूजन ॥

पृथ्वी का स्पर्श कर इस मन्त्र को बोलें तथा पृथ्वी पूजन करें।

पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।

त्वं च धारय मां देवी पवित्रं कुरू चासनम्॥

॥ भूतोत्सादन मन्त्र ॥

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूतले स्थिताः।

ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

॥ पवित्री करण ॥

क्रिया शरीर को परमात्मा से जोड़ती है तथा मन्त्र मन को परमात्मा से जोड़ते हैं। परमात्मा नित्य शुद्ध, बुद्ध है अतः सर्व प्रथम निम्न मन्त्र से शरीर पर तथा पूजा सामग्री पर जल के छींटे देते हुवे मन्त्र बोलें॥

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

॥ आचमन ॥ *इन तीन मन्त्रों से तीन बार आचमन करें।*

ॐ केशवाय नमः॥ ॐ माधवाय नमः॥ ॐ नारायणाय नमः॥

इस मन्त्र को बोल कर हाथ धो लें।

हृशीकेशाय नमः। गोविन्दाय नमः। हस्तो प्रक्षाल्यम्॥

अथवा निम्न लिखित मन्त्रों से भी आचमन किया जा सकता है॥

ॐ आत्मतत्वं शोधयामि स्वाहा॥ *आचमन करें।*

ॐ शिवतत्वं शोधयामि स्वाहा॥ *आचमन करें।*

ॐ विद्यातत्वं शोधयामि स्वाहा॥ *आचमन करें।*

ॐ सर्वतत्वं शोधयामि स्वाहा॥ *हाथ धो लें।*

बांयें हाथ में थोड़ा सा जल लेकर दायें हाथ की अनामिका तथा मध्यमा उंगली से अङ्ग स्पर्श करें।

ॐ वाङ्मे आस्ये अस्तु। *मुख का स्पर्श करें।*

ॐ नसोर्मे प्राणो अस्तु। *नांक का स्पर्श करें।*

ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु। *आंखों का स्पर्श करें।*

ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु। *कांनों का स्पर्श करें।*

बाह्वोर्मे बलमस्तु। *बांहों का स्पर्श करें॥*

ॐ ऊर्वो मे ओजोऽस्तु। *जांघों को स्पर्श करें।*

बचा हुआ जल मस्तक के ऊपर से पूरे शरीर पर छिड़कें।

ॐ अरिष्टानि मे अङ्गानि तनुस्तन्वा मे सहसन्तु।

पूजन प्रारम्भ करने से पहले शुद्ध धुले हुवे वस्त्र पहन कर अन्य सभी प्रकार के कार्यों से निवृत हो मन तथा शरीर से परमात्मा के सान्निध्य में पूरी निष्ठा तथा भाव से बैठें। बैठने के लिए कुशासन, कम्बलासन, व्याघ्रचर्म या मृगचर्म का उपयोग किया जाता है।

॥ तिलक धारण ॥

तिलक के बिना सत्कर्म सफल नहीं होता। तिलक बैठ कर लगाना चाहिये। अपने आचार के अनुसार मिट्टि, चन्दन, और भस्म, इन में से किसी के द्वारा भी तिलक लगाना चाहिये। भगवान पर चढ़ाने से बचे हुए चन्दन को ही लगाना चाहिये। अँगूठे से नीचे से ऊपर की ओर चन्दन लगायें।

चन्दनन्तु महत्पुण्यं पवित्रं पापनाशनम्।
आपदं हरते नित्यं लक्ष्मिस्तिष्ठतु सर्वदा।

॥ सध्या संकल्प ॥

इस के बाद हाथ में कुश और जल लेकर संध्या संकल्प पड़कर जल किसी वर्तन मे छोड दें॥

विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः परमात्मने श्री पुराण पुरुषोत्तमाय। विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणोऽह्नि। द्वितीय परार्धे श्रीश्वेत बाराह कल्पे वैवस्वत मन्वतरे। अष्टाविंशतितमे। कलियुगे कलि प्रथमचरणे आर्यावर्ते

ओस्ट्रेलिया महा देशे --- नगरे --- नाम ग्रामस्थाने (अमुक -- नाम) संवत्सरे। महा माङ्गल्य प्रदे मासानां मासोत्तमे --- मासे --- पक्षे --- तिथौ --- वासरे --- काले --- गोत्र उत्पन्नः --- नाम यजमानो एवं परिवार सहितः अहं नित्य कल्याण लाभाय। श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं च मोक्षाणां हेतवे च संध्योपासनं करिष्ये॥

॥ प्राणायाम विधि ॥

सर्व प्रथम सुखासन में बैठ जायें। फिर दायें हाथ के अंगूठे से दायीं नासिका छिद्र को बन्द कर वाह्य रेचक करें। यभीतर की वायु को धीरे धीरे बाहर निकालें।फ पुनः मन ही मन एक आवृति मन्त्र बोलते हुए वाम नासिका से। स्वाँस भीतर की ओर खींचे एवं चार आवृति यमन ही मनफ मन्त्र बोलें। दो आवृति मन्त्र के साथ स्वाँस को दायीं नासिका से धीरे धीरे बाहर कर दें। इस प्रकार पूरक कुम्भक तथा रेचक की प्रक्रिया से प्राणायाम बनता है जो योग का चतुर्थ एवं महत्वपूर्ण अंग है।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम्॥ ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्॥

*प्राणायाम के बाद यथा सम्भव **गायत्री मन्त्र** का जाप करें ॥*

ॐ भूःभुर्वः स्वः ॥ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥

॥ मध्याह्न सन्ध्या ॥

ॐ मध्याह्ने विष्णुरुपं च तार्क्ष्यस्थां पीतवाससाम्।

युवतीं च यजुर्वेदां सूर्यमण्डल संस्थिताम्॥

सूर्य मण्डल में स्थित युवावस्था वाली, पीला वस्त्र, शङ्ख, चक्र, गदा, तथा पद्म, धारण कर गरुड़ पर बैठी हुई, यजुर्वद स्वरुप गायत्री का ध्यान करें। विष्णु रुपा गायत्री का ध्यान करते हुये प्रातः संध्या के अनुसार ही करें।

॥ सायं संध्या ॥

ॐ सायाह्ने शिवरुपं च वृद्धां वृषभ वाहिनीम्।

सूर्यमण्डल मध्यस्थां सामवेद समायुतम्॥

सूर्य मण्डल में स्थित वृद्धा रुपा, त्रिशूल, डमरु, पाश, तथा पात्र, लिये वृषभ पर बैठी हुई, सामवेद स्वरुपा, गायत्री का ध्यान करें।

शिव रुपा गायत्री का ध्यान करते हुये प्रातः संध्या के अनुसार करें। विस्तृत विधान के लिये पेज नम्बर १० से २० मे देखें ॥

॥ आशौच में संध्योपासना की विधि ॥

महर्षि पुलस्त्य ने जननाशौच एवं मरणाशौच में संध्योपासन की अबाधित आवश्यकता बतलायी है। किन्तु अशौच में इस की प्रक्रिया भिन्न हो जाती है। शास्त्रों ने इस में

मानसी संध्या का विधान किया है। यह संध्या आरम्भ से सूर्य के अर्ध्य तक ही सीमित रहती है। यहाँ दस बार गायत्री का जप आवश्यक है। इतने से संध्योपासन का फल प्राप्त हो जाता है। मार्जन मन्त्रों का मन से उच्चारण कर मार्जन करें। गायत्री का सम्यक् उच्चारण कर सूर्य को अर्ध्य दें।आपत्ति के समय, रास्ते में और अशक्त होने की स्थिती में भी मानसी संध्या की जाती है।

॥ पञ्च महायज्ञ ॥

अध्यापनं ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञस्तु तर्पणम्।
होमो दैवो बलिर्भूतो नृयज्ञोऽतिथि पूजनम्॥

ब्रह्मयज्ञ *- वेद वेदाङ्गादि तथा पुराणादि आर्षग्रन्थों का स्वाध्याय।* ***पित्रयज्ञ*** *- श्राद्ध तथा तर्पण।* ***देवयज्ञ*** *- देवताओं का पूजन एवं हवन।* ***भूतयज्ञ*** *- बलिवैश्व देव तथा पञ्च बलि।* ***मनुश्य यज्ञ*** *- अतिथि सत्कार। इन पांच यज्ञों को प्रतिदिन अवश्य करना चाहिये।*

॥ ब्रह्मयज्ञ अथवा स्वाध्याय ॥

संध्या बन्दन के बाद द्विज मात्र को प्रतिदिन वेद पुराण का पठन पाठन करना चाहिये। अथवा अपनी कुल परम्परा के अनुसार एवं गुरु के द्वारा निर्दिष्ट विधि के अनुसार पाठ या गायत्री महा मन्त्र का जप करने से ब्रह्मयज्ञ की पूर्ति हो जाती है॥

॥ पितृयज्ञ - तर्पण ॥

इस के बाद पूर्वाभिमुख हो सीधे बैठ जाय। कुशों को सीधा कर उन के अग्र भाग को भी पूरब की ओर कर लें। फिर नीचे लिखे श्लोकों को पढ़ते हुए देव तीर्थ से जल गिरायें॥

देवासुरास्तथा यक्षा नागा गन्धर्व राक्षसाः।

पिशाचा गुह्यकाः सिद्धाः कूष्माण्डास्तरवः खगाः॥

जलेचरा भूनिलया वाय्वा धाराश्च जन्तवः।

तृप्तिमेते प्रयान्त्वाशु मद्दत्तेनाम्बुनाखिलाः॥

॥ देवयज्ञ ॥

नित्य देवताओं का पूजन एवं हवन करने का विधान शास्त्रों मे कहा गया है अतः अपनी शक्ति तथा समय के अनुसार देव पूजन विधि से गृह मन्दिर मे पूजन करें ॥

॥ भूतयज्ञ ॥

बलिवैश्व देव तथा पञ्च बलि ।

जब हिन्दु के धर मे रसोई बनती है तो केवल अपने लिये नही वरन उसके हिस्सेदार और भी होते हैं । रसोइ मे पकेहुये भोजन मे से २० आहुतियाँ देवताओं को देने के बाद पञ्च ग्रास निकाले जाते हैं ॥

१॥ **गोबलिः** – मन्त्र पढ़ते हुए गोबलि पत्ते पर दें।

इदं गोभ्यो न मम॥

२॥ **श्वानबलिः** – मन्त्र पढ़ते हुये कुत्तों को बलि दें।

इदं श्वभ्यो न मम॥

३॥ **काकबलिः** – मन्त्र पढ़ते हुये कौओं को भूमि पर अन्न दें।

इदं वायसेभ्यो न मम॥

४॥ **देवादिबलिः** – मन्त्र पढ़ते हुये देवता आदि के लिये अन्न दें।

इदं देवादि भ्यो न मम्॥

५॥ **पिपीलिकादिबलिः** – मन्त्र पढ़ते हुये चींटीआदि को बलि दें।

इदं पिपीलिकादिभ्यो न मम॥

॥ मनुश्ययज्ञः ॥

अतिथि सत्कार। भोजन के समय उपस्थित अतिथि को सर्व प्रथम भोजन करा कर स्वयं भोजन करने का विधान है ॥

॥ मानस पूजा ॥

सर्व प्रथम मानस पूजा कर के फिर स्थूल पूजन करने का विधान है। वस्तुतः भगवान को किसी वस्तु की आवश्यक्ता नहीं है, वे तो भाव के भूखे हैं। कहा गया है कि-

भाव का भूखा हूँ मैं, भाव ही इक सार है।
भाव से मुझ को भजे जो, भव से बेड़ा पार हो॥

संसार में ऐसे दिव्य पदार्थ नहीं जो भगवान को अर्पण किये जा सकें, इस लिये पुराणों में मानस पूजा का विशेष महत्व माना गया है। मानस पूजा में भक्त अपने आराध्य के लिये दुर्लभ वस्तुओं की कल्पना कर के उन्हें अर्पण करता है। वस्त्र, आभूषण भी दिव्य, अलौकिक होते हैं। भावना से वायु रूपी धूप, अग्नि रूपी दीपक, तथा अमृत रूपी नैवेद्य, भगवान को अर्पण करने की विधी है।

इस के साथ ही त्रिलोक की सम्पूर्ण वस्तु, सभी उपचार, सच्चिदानन्दधन परमात्मा के चरणों में भक्त भावना पूर्वक, अर्पण करता है। यह है मानस पूजा का स्वरुप। इस की एक संक्षिप्त विधि भी पुराणों में वर्णित है। जो नीचे लिखी जा रही है॥

१॥ ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं परिकल्पयामि॥

प्रभो - मैं पृथ्वी रुप गन्ध - चन्दन आप को अर्पित करता हूँ॥

२॥ ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं परिकल्पयामि॥

प्रभो - मैं आकाश रुप पुष्प आप को अर्पित करता हूँ॥

३॥ ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं परिकल्पयामि॥

प्रभो – मैं वायु देव के रुप में धूप आप को अर्पित करता हूँ ॥

४ ॥ ॐ रं वन्ह्यात्मकं दीपं दर्शयामि ॥

प्रभो – मैं अग्नि देव के रुप में दीपक आप को प्रदान करता हूँ ॥

५ ॥ ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि ॥

प्रभो – मैं अमृत के समान नैवेद्य आप को निवेदन करता हूँ ॥

६ ॥ ॐ सौं सर्वात्मकं सर्वोपचारं समर्पयामि ॥

प्रभो – मैं सर्वात्मा के रुप में संसार के सभी उपचारों को आप के चरणों में समर्पित करता हूँ ॥

इन मन्त्रों से भावना पूर्वक पूजा की जा सकती है। मानस पूजा से चित्त एकाग्र और सरस हो जाता है। इस से बाह्य पूजा में भी रस मिलने लगता है। यद्यपि इसका प्रचार कम है तथापि इसे अवश्य अपनाना चाहिये ॥

॥ पूजा की भीतरी तैयारी ॥

शास्त्रों में पूजा को हजार गुना अधिक महत्वपूर्ण बनाने के लिये एक उपाय बतलाया गया है। वह उपाय है मानस पूजा। जिसे पूजा से पहले करके फिर बाह्य वस्तुओं से पूजन करने का विधान है। शास्त्र कारों का मानना है कि मनः कल्पित यदि एक फूल भी भगवान को चढ़ा दिया जाय तो करोड़ो बाहरी फूल चढ़ाने के बराबर होता है। इसी प्रकार मानस चन्दन, धूप, दीप, नैवेद्य, भी भगवान को करोड़ गुना अधिक संतोष दे सकेंगे। अतः मानस पूजा बहुत अपेक्षित है।

मेरे मन के दिव्य महल में। अब हे हरि वास करो ।

मन मोहन मानस पूजा। मेरी स्वीकार करो ॥

१ - रत्नों का कल्पित आसन। मुद मंगल जल स्नान करो ।

ये दिव्यम्बर हैं अर्पण। मेरे मानस मोद भरो॥ मेरे मन के

२ - कस्तुरीमय चन्दन। निज भाल कृपाल धरो।

स्वच्छ सुमन की माला। प्रभु कण्ठ समर्पित हो॥ मेरे मन के

३ - यह धूप सुगन्धितमय। निर्मल दीप दिखाउँ मैं।

इस हेम रचित बर्तन मे। नित भोग लगाउँ मैं॥ मेरे मन के

४ - ये पाँच पदारथ रसमय। जो चार प्रकार धरुँ।

ये ऋतुफल अर्पण हैं। करलो स्वीकार प्रभु॥ मेरे मन के

५ - दिव्य सुगन्धितमय। ये मुखवास चढाउँगा।

मैं सादर हर्षित हो। अब संगीत सुनाउँगा॥ मेरे मन के

६ - मै मन मे मग्न हुआ। अष्टांग प्रणाम करुँ।

जीवन अर्पण सेवा मे। बस यही भेंट धरुँ॥ मेरे मन के

॥ पूजा की बाहरी तैयारी तथा पूजा सामाग्री के रखने का प्रकार ॥

पूजन की किस वस्तु को किधर रखना चाहिये इस बात का भी शास्त्रों ने निर्देश दिया है। इस के अनुसार वस्तुओं को यथा स्थान सजा देना चाहिये।

बायीं ओर – १। सुवासित जल से भरा उदकुम्भ – जलपात्र ॥ २। घंटी ॥
३॥ और धूपदानी ॥ ४ ॥ तेल का दीपक ॥

दायी ओर – १। धृत का दीपक ॥ २। सुवासित जल से भरा शङ्ख ॥

सामने – १। कुम्कुम – केसर ॥ २। कपूर के साथ घिसा गाढ़ा चन्द

ध्यान रहे पुष्प आदि हाथ में तथा चन्दन ताम्र पात्र में अपवित्र हो जाते हैं।

॥ दैनिक पूजा एवं अर्चना ॥

यदि आप विधिवत नित्य पूजन करते हैं तव पूजा की पूर्ण तैयारी के साथ अपने आसन पर बैठ जायें। वैठते समय पूर्व या उत्तर की ओर मुख कर के वैठें। तीन बार आचमन करें। षटकर्म के बाद पाँचो देवों का पूजन एक साथ अथवा पृथक पृथक भी किया जा सकता है। पूजन का विधान गणपति पूजन के समान ही होगा। यदि आप विस्तृत पूजन करने में असमर्थ हैं तो केवल मानसिक पूजन ही कर लें अथवा अपने गुरु मन्त्र का जप कर ले। जप की संख्या कम से कम एग्यारह बार होती है।

॥ पाँच उपचार ॥

१। गन्ध ॥ २। पुष्प ॥ ३। धूप ॥ ४। दीप ॥ ५। नैवेद्य ॥

॥ दस उपचार ॥

१। पाद्य ॥ २। अर्घ्य ॥ ३। आचमन ॥ ४। स्नान ॥ ५। वस्त्र ॥
६। गन्ध ॥ ७। पुष्प ॥ ८। धूप ॥ ९। दीप ॥ १०। नैवेद्य ॥

॥ सोलह उपचार ॥

१। पाद्य ॥ २। ॥ ३। आचमन ॥ ४। स्नान ॥ ५। वस्त्र ॥

६। आभूषण ७। गन्ध ॥ ८। पुष्प ॥ ९। धूप ॥ १०। दीप ॥

११। नैवेद्य ॥ १२। आचमन ॥ १३। ताम्बूल ॥ १४। स्तव पाठ ॥

१५। तर्पण ॥ १६। नमस्कार ॥

॥ पञ्चदेव पूजन ॥

आदित्यं गणनाथञ्च देवी रूद्रञ्च केशवं।

पञ्च दैवत्यमित्युक्तं सर्व कर्मसु पूजयेत्॥

मत्स्य पुराण में कहा गया है कि भगवान सूर्य, भगवान गणपति, भगवती दुर्गा, भगवान शंकर, एवं भगवान विष्णु, इन पाँच देवी देवताओं का पूजन सभी कर्मों में करना चाहिये । हिन्दु परम्परा में यही पाँच मत चले आये हैं। भगवान गणपति के उपासक उन्हें अपना इष्ट देवता मानते हैं। भगवान विष्णु के उपासक वैष्णव कहलाते हैं तथा उन के चौबीस अवतारों की अपनी मान्यताओं के आधार पर पूजन करते है। भगवान शंकर के उपासक शैव कहलाते हैं तथा शंकर को ही अपना इष्ट देव मानते हैं। शक्ति के उपासक शाक्त कहलाते हैं तथा भगवती दुर्गा को एवं उन के अनेक स्वरूपों की उपासना करते हैं । इसी प्रकार भगवान सूर्य के उपासक उन्हें अपना इष्ट देव मान कर नित्य उन की आराधना करते है॥ पृष्ठ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ मे लिखे विधान के अनुसार षट्कर्म करने के बाद, *हाथ में पुष्पाक्षत लेकर निम्नोक्त स्वस्ति वाचन करें।*

॥ अथ पञ्चायतन देवता स्थानम् ॥

॥१॥ श्री शिव पञ्चायतनम्। विष्णु सूर्य **शिव** देवी गणेश	॥२॥ श्री विष्णु पञ्चायतनम्। शिव गणेश **विष्णु** देवी सूर्य
॥३॥ श्री सूर्य पञ्चायतनम्। शिव गणेश **सूर्य** देवी विष्णु	॥४॥ श्री देवी पञ्चायतनम्। विष्णु शिव **देवी** सूर्य गणेश
॥५॥ श्री गणेश पञ्चायतनम्। विष्णु शिव **गणेश** देवी सूर्य	

सदा भवानी दाहिने सन्मुख रहे गणेश। पञ्चदेव रक्षा करें शङ्कर विष्णु दिनेश॥

सूर्य, गणेश, दुर्गा, शिव, एवं विष्णु, ये पञ्चदेव कहे गये हैं। इनकी पूजा सभी कार्यों में करनी चाहिये। कल्याण चाहने वाले गृहस्थ, एक मूर्ति की ही पूजा न करें किन्तु अनेक देव मूर्ति की पूजा करें, इससे कामना पूरी होती है॥

॥ स्वस्ति वाचन ॥

हरिः ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निर्जिह्वा मनवः सूर चक्षसो विश्वे नो देवा अवसाग मन्निह॥ भद्रं कर्णेभिः ऋणुयाम देवाः भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरै रङ्गै स्तुष्टुवा ꣳ सस्तनूभि र्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। लक्ष्मी नारायणाभ्यां नमः।

उमा महेश्वराभ्यां नमः। वाणी हिरण्यगर्भाभ्यां नमः।

शची पुरन्दराभ्यां नमः। माता पितृ चरण कमलेभ्यो न

श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः। इष्ट देवताभ्यो नमः।

कुल देवताभ्यो नमः। ग्राम देवताभ्यो नमः।

वास्तु देवताभ्यो नमः। स्थान देवताभ्यो नमः।

सर्वेभ्यो देव्येभ्यो नमः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः।

ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।

॥ पूजन का संकल्प ॥

सर्व प्रथम पूजन का संकल्प करें – विस्तृत संकल्प पृष्ठ १७ एवं १८ पर दिया गया है

क – निष्काम संकल्प – ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य ---- अहं श्री परमेश्वर प्रीत्यार्थं विष्णु ,शिव, गणेश, सूर्य, दुर्गार्चनं करिष्ये ॥

ख – सकाम संकल्प – ॐ ---- सर्वा भीष्ट स्वर्गापवर्ग फल प्राप्ति द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यार्थं विष्णु, शिव, गणेश, सूर्य, दुर्गार्चनं करिष्ये ॥

॥ दीपक पूजन ॥

दीपो ज्योतिः परं ब्रह्म । दीप ज्योतिर्जनार्दनः ।
दीपो हरतु मे पापं । दीप ज्योतिर्नमोऽस्तु ते ॥

॥ घण्टी पूजन ॥

धण्टी को चन्दन और फूल से अलंकृत कर निम्न लिखित मन्त्र पढ़कर प्रार्थना करें।

आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं च रक्षसाम् ।
सर्व भूत हितार्थाय घण्टानादं करोम्यऽहम् ॥

॥ शङ्ख पूजन ॥

शङ्ख में दो दर्भ अथवा दूब, तुलसी और फूल डाल कर ॐ कह कर उसे सुवासित जल से भर दें। इस जल को गायत्री मन्त्र से अभिमन्त्रित कर दें। फिर निम्न लिखित मन्त्र पढ़ कर शङ्ख में तीर्थों का आवाहन करें।

पृथिव्यां यानि तीर्थानि स्थावराणि चराणि च ।

तानि तीर्थानि शङ्खेऽस्मिन् विशन्तु ब्रह्मशासनात् ॥

तब शङ्खाय नमः चन्दनं समर्पयामि कहकर चन्दन लगाये और शङ्खाय नमः पुष्पं समर्पयामि कह कर फूल चढ़ाये। इस के बाद निम्न लिखित मन्त्र से शङ्ख को प्रणाम करें।

त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे ।

निर्मितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य नमोऽस्तु ते ॥

॥ कलश पूजा ॥

सुवासित जल से भरे हुए उदककुम्भ - कलश - की उदककुम्भाय नमः इस मन्त्र से चन्दन फूल आदि से पूजा कर इस में तीर्थों का आवाहन करें।

कलशस्य मुखे विष्णुः, कण्ठे रुद्रः समाश्रिताः। मूलेत्वस्य स्थितो ब्रह्मा, मध्ये मातृगणा स्मृताः॥ कुक्षौ तु सागराः सर्वे, सप्तद्वीपा बसुन्धरा। ऋगवेदोऽथ यजुर्वेदः, सामवेदोः ह्यथर्वणः॥ अङ्गैश्च सहीताः सर्वे, कलशं तु समाश्रिताः। आयान्तु देव पूजार्थम् , दुरित क्षय कारकाः॥

दोहा। रहिमन धागा प्रेम का। मत तोड़ो चटकाये।

टूटे से फिर ना जुड़े। जुड़े गांठ पड़ि जाये॥ रहीम॥

अब पञ्च देवों की पूजा करें। सब से पहले ध्यान करें।

॥ गणेश जी का ध्यान ॥

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय। लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय। नागाननाय श्रुति यज्ञ विभूषिताय। गौरी सुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥

ध्यानार्थे अक्षत पुष्पाणि समर्पयामि। ॐ श्री गणनाथाय नमः ॥

॥ देवी का ध्यान ॥ *हाथ में फूल लेकर ध्यान करें।*

नमो देव्यै महा देव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्॥ सिद्धि बुद्धि सहिताय महा गणाधिपतये नमः। ध्यानं समर्पयामि ॥

॥ गणपति आवाहन ॥ *हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करें।*

ॐ गणानां त्वा गणपति ꣳ हवामहे। प्रियाणां त्वा प्रियपति ꣳ हवामहे। निधीनां त्वा निधिपति ꣳ हवामहे वसोमम। आहम जानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धि बुद्धि सहिताय श्री मन्महागणाधिपतये नमः ॥

गणपतिं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि, नमस्करोमि च, अक्षतां समर्पयामि ॥

॥अन्य देवताओं का आवाहन ॥

आगच्छन्तु सुर श्रेष्ठाः स्थानेचात्र स्थिरो भव। यावत् पूजां करिष्यामि सांनिध्यं कुरु सर्वदा ॥

*ॐ गणपत्यादि **पञ्च** देवेभ्यो नमः। ध्यानार्थे पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ॥*

॥ आसन ॥

अनेक रत्न संयुक्तं नानामणि गणान्वितं। इदं हेममयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम् ॥

*ॐ गणपत्यादि **पञ्च** देवेभ्यो नमः। आसनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि ॥*

॥ पाद्य ॥ *देवता के पांव धुलायें।*

गङ्गादि सर्व तीर्थेभ्यो, आनीतं तोयमुत्तमम्। पाद्यार्थम् ते प्रदास्यामि, गृहाण परमेश्वर ॥

*ॐ गणपत्यादि **पञ्च** देवेभ्यो नमः। पादयोः पाद्यं समर्पयामि ॥*

॥ अर्घ्य ॥ *मूर्ति के हाथ धुलायें।*

गन्ध पुष्पाक्षतैर्युक्तं, अर्घ्यम् सम्पादितं मया। गृहाण पंच देवत्वं, प्रसन्ना भव सर्वदा ॥

*ॐ गणपत्यादि **पञ्च** देवेभ्यो नमः। हस्तयोः अर्घ्यम् समर्पयामि ॥*

॥ **आचमन** ॥ *मूर्ति के चेहरे में जल छिडकें।*

कर्पूरेण सुगन्धेन वासितं। स्वादु शीतलम्। तोयं आचमनीयार्थम्। गृहाण परमेश्वर॥

*ॐ गणपत्यादि **पञ्च** देवेभ्यो नमः। आचमनीयं समर्पयामि॥*

॥ **स्नान** ॥ *मूर्ति को जल से स्नान करायें।*

मन्दाकिन्यस्तु यद्वारि सर्व पापहरं शुभं। तदिदं कल्पितं देव यदेविफ स्नानार्थम् प्रतिगृह्यताम्॥

*ॐ गणपत्यादि **पञ्च** देवेभ्यो नमः। स्नानार्थम् जलं समर्पयामि॥*

॥ **पञ्चामृत स्नान** ॥ *पञ्चामृत से मूर्ति को स्नान करायें।*

पयो दधि धृतं चैव। मधुं च शर्करान्वितं। पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं। स्नानार्थम् प्रतिगृह्यताम्॥

*ॐ गणपत्यादि **पञ्च** देवेभ्यो नमः। **पञ्चामृत** स्नानं समर्पयामि॥*

॥ **गन्धोदक स्नान** ॥

गन्धोदक से मूर्ति को स्नान करायें। (गंगा जल एवं रोज ओटर)

मलयाचल सम्भूतं चन्दनागरूमिश्रितं। सलिलं देव देवेश गन्धोयं प्रतिगृह्यताम्॥

*ॐ गणपत्यादि **पञ्च** देवेभ्यो नमः। गन्धोदक स्नानं समर्पयामि॥*

॥ शुद्धोदक स्नान ॥

शुद्धं यत् सलिलं दिव्यं गङ्गाजल समं स्मृतं। समर्पितं मया भक्तया स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ गणपत्यादि पञ्च देवेभ्यो नमः। शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि॥

॥ वस्त्र यज्ञोपवीत ॥ *वस्त्र एवं यज्ञोपवीत लेकर मूर्ति मे चढ़ायें।*

शीतवातोष्णसं त्राणं लज्जाया रक्षणं परम्। देहालंकरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ गणपत्यादि पञ्च देवेभ्यो नमः। वस्त्रोपवस्त्रं कञ्चुकीयं च समर्पयामि॥

॥ चन्दन ॥ *मूर्ति को चंदन चढ़ायें।*

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढयं सुमनोहरम्। विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ गणपत्यादि पञ्च देवेभ्यो नमः। गन्धानु लेपनं समर्पयामि॥

॥ सिन्दूर ॥ *मूर्ति को सिन्दूर कुंकुम अबीर इत्यादि चढ़ायें।*

सिन्दूर मरुणाभासं जपा कुसुम संनिभम्। अर्पितं ते मया भक्त्या प्रसीद परमेश्वर॥

ॐ गणपत्यादि पञ्च देवेभ्यो नमः। सिन्दूरं समर्पयामि॥

॥ **अक्षत** ॥ *मूर्ति को अक्षत चढ़ायें।*

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठा कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः। मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥

ॐ गणपत्यादि पञ्च देवेभ्यो नमः। अक्षताँश्च समर्पयामि ॥

॥ **पुष्प माला** ॥ *मूर्ति को फूल एवं पुष्प माला चढ़ायें।*

माल्यादीनि सुगंधीनि। मालत्यादीनि भक्तितः। मयाहृतानि पुष्पाणि। पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ गणपत्यादि पञ्च देवेभ्यो नमः। पुष्पाणि पुष्प मालां समर्पयामि ॥

॥ **धूप** ॥ *मूर्ति को धूप एवं अगरबत्ती चढ़ायें।*

वनस्पति रसोद्भूतो। गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्व देवानां। धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ गणपत्यादि पञ्च देवेभ्यो नमः। धूपं आघ्रापयामि ॥

॥ **दीप** ॥ *मूर्ति को प्रत्यक्ष दीपक दिखायें।*

साज्यं च वर्ति संयुक्तं वाह्निना योजितं मया। दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापहम् ॥

*ॐ गणपत्यादि **पञ्च** देवेभ्यो नमः। दीपं दर्शयामि ॥*

हृशीकेशाय नमः हस्तौ प्रक्षाल्य ॥

॥ **नैवेद्य** ॥ *मूर्ति को नैवेद्य एवं प्रसाद चढ़ायें।*

शर्करा खण्ड खाद्यानि, दधि क्षीर धृतानि च। आहारं भक्ष्य भोज्यं च, नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

*ॐ गणपत्यादि **पञ्च** देवेभ्यो नमः। नैवेद्यं निवेदयामि ॥*

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा।

ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा।

॥ **आचमनि** ॥ *नैवेद्य के चारोंतरफ तीन बार जल गिरायें॥*

मध्ये आचमनीयं जलं उत्तरापोशनं च समर्पयामि ॥

॥ **ऋतु फल** ॥ *देवता को अखंड ऋतुफल चढ़ायें।*

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेत् जन्मनि जन्मनि ॥

ॐ गणपत्यादि पञ्च देवेभ्यो नमः। ऋतु फलं निवेदयामि॥

हृशीकेशाय नमः हस्तौ प्रक्षाल्य॥

॥ **ताम्बूल** ॥ *पान के पत्ते पर पूगीफल एलायची लवङ्ग रख कर देवता को चढ़ायें।*

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्ली दलैर्युतं। एला लवङ्ग संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ गणपत्यादि ***पञ्च*** *देवेभ्यो नमः। मुख सुध्यर्थे ताम्बूलं समर्पयामि॥*

॥ दक्षिणा ॥ *यथा शक्ति दक्षिणां लेकर देवता को चढ़ायें।*

दक्षिणां हेमसहितं यथा शक्ति समर्पितं। अनन्त फलदामेनं गृहाण परमेश्वर॥

ॐ गणपत्यादि ***पञ्च*** *देवेभ्यो नमः। द्रव्य दक्षिणां समर्पयामि॥*

इसके बाद पुष्पांजलि मन्त्रों से फूल चढ़ायें । देखें पृष्ठ ५८ पर॥

- अनेन अस्माभि कृतेन पूजनेन गणपत्याद्यावाहितः देवताः सन्तुष्टाः वरदाः शान्तिदाः भवन्तु।

दोहा॥ *कहते उसे ही योग जिसमें सर्व दुःख वियोग है।*
दृढ़ चित हो कर साधने के योग्य ही यह योग है॥ (गीता)

दोहा॥ *मुझ से परे कुछ भी नहीं संसार का विस्तार है।*
जिस भाँति माला में मणी मुझ में गुथा संसार है॥ (गीता)

गणेश स्तवन

जयति सुमुख जय गणेश एक दन्त प्यारे ।

जय कपिल गज वदन दीनन दुख हारे ॥

१ - लम्बोदर बिध्न दलन जयति सुमुख वाले ।

एक दन्त सूर्प कर्ण मोहक छबि धारे ॥ जयति सुमुख जय ---

२ - रुद्र तेज बिकट रुप दैत्य दलन कारी ।

गजमुख श्री भाल चन्द्र गणपति भय हारी ॥ जयति सुमुख जय ---

३ - द्वादश हैं दिव्य नाम रोग शोक हारी ।

ऋद्धि सिद्धि सदा रहे जग मंगल कारी ॥ जयति सुमुख जय ---

४ - गौरी पुत्र हे गणेश भक्त त्रास हारी ।

प्रथम पूज्य आदि देव सन्तन रखवारी ॥ जयति सुमुख जय ---

५ - प्रथम सृष्टि माँ भवानी लीला वपु धारी ।

एक कल्प स्वयं विष्णु गणपति रुप कारी ॥ जयति सुमुख जय ---

६ - आप कर्ता आप भर्ता लीलान्त कारी ।

ब्रह्मा रुद्र विष्णु तुम्ही शक्ती रुप धारी ॥ जयति सुमुख जय ---

७ - देव दनुज योगी मनुज आप के पुजारी ।

नाद बिन्दु कलातीत हे ॐ कारी ॥ जयति सुमुख जय ---

८ - नित्य नेम पाठ करे पूर्ण चित्त लाइ ।

ऋद्धि सिद्धि प्राप्त करे मन वाँछित पाइ ॥ जयति सुमुख जय ---

विष्णु पूजा एवं स्तुति ॥

॥ विष्णु का ध्यान ॥

स शङ्ख चक्रं सकिरीट कुण्डलं सपीत वस्त्रं सरसी रुहेक्षणम ।

स हार वक्षस्थल शोभि कौस्तुभं नमामि विष्णुं सिरसा चतुर्भुजम ॥

उदीयमान करोड़ों सूर्य के समान प्रभातुल्य अपने चारों हाथों में शङ्ख, गदा, पद्म तथा चक्र, धारण किये हुए एवं दोनों भागों में भगवती लक्ष्मी और पृथ्वि देवी से सुशोभित किरीट, मुकुट, केयूर, हार और कुण्डलों से समलंकृत कौस्तुभ मणि तथा पीताम्बर से देदीप्य मान विग्रह युक्त एवं वक्षःस्थल पर श्रीवत्सचिह्न धारण किये हुए भगवान विष्णु का मैं निरन्तर ध्यान करता हूँ ॥

॥ विष्णु स्तुति ॥

हरि बोल हरि बोल हरि हरि बोल । केशव माधव गोविन्द् बोल ।

१- सुनु गिरिजा हरि चरित सुहाये । बिपुल विशद् निगमागम गाये ।

हरि अवतार हेतु जेगि होई । इदमित्थं कहि जाइ न सोई ।

हरि बोल हरि बोल हरि हरि बोल--

२- जब जब होइ धरम कै हानी । बाढहिं असुर अधम अभिमानी ।

तब तब प्रभु धरि विविध शरीरा । हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा ।

हरि बोल हरि बोल हरि हरि बोल--

३- रूप विराट समान न दूसर। शयन करत अहिराज के उपर।

कर्ण नासिका शीश हजारा। रूप विराट सर्व संसारा।

हरि बोल हरि बोल हरि हरि बोल--

४- तासु नाभि ते पंकज फूला। निकसेउ तासु ब्रह्म जग मूला।

प्रथम जन्म सनकादिक चारू। महि उद्धारणभये बराहु।

हरि बोल हरि बोल हरि हरि बोल--

५- तृतियस यज्ञ पुरूष ले जन्मा। प्रगट कीन्ह सब मुनि मख कर्मा।

अश्वग्रीव स्तुति प्रभु तन धारा। पंचम नर नारायण अवतारा।

हरि बोल हरि बोल हरि हरि बोल--

६- कपिल मुनि षष्टम गुण खाना। दत्त देव सप्तम जग जाना।

अष्टम ऋषभ देव करतारा। ज्ञान मार्ग का करे प्रचारा।

हरि बोल हरि बोल हरि हरि बोल--

७- वेन मथन हित पृथु नव होई। दशम मीन प्रगटे खर द्रोही।

सिन्धु मथन एकादश कच्छप। द्वादश धन्वन्तरी सुर रक्षक।

हरि बोल हरि बोल हरि हरि बोल--

८- तव प्रभु धर मोहिनि अवतारा। नर हरि रूप मे भक्त उद्धारा।

कर्दम घर वामन बन आये। परशुराम बन धर्म बचाये।

हरि बोल हरि बोल हरि हरि बोल--

९- दश और सातवाँ रूप सुजाना। व्यास रूप मे वेद बखाना।

राम चन्द्र बन रावण मारे। बलदाउ बन दुष्ट संहारे।

हरि बोल हरि बोल हरि हरि बोल--

१०- बीसवाँ कृष्ण चन्द्र भगवाना। एक विंश हरि ध्रुव हित ठाना।

हंस रूप मे प्रभु जब आये। अत्म योग नारद प्रति गाये।

हरि बोल हरि बोल हरि हरि बोल--

११- होअहिं यज्ञ कुपात्रन द्वारा। तव धर विष्णु बुद्व अवतारा।

बधहिं शूद्र क्षितीशन ईश्वर। कल्कि रूप धर कलियुग अन्दर।

हरि बोल हरि बोल हरि हरि बोल--

१२- हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता। कहहि सुनहि बहु बिधि सब सन्ता

अवनि भार नाशन भगवन्ता। लीलामय वपु धरहिं अनन्ता।

हरि बोल हरि बोल हरि हरि बोल।

शिव पूजा एवं स्तुति ॥

॥ शिव जी का ध्यान ॥

यस्याङ्के च विभाति भूधर सुता देवापगा मस्तके।

भालेबाल विधुर्गले च गरलम् यस्योरसि ब्यालराट्।

सोऽ यं भूतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा ।

शर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्रीशंकरः पातु माम् ॥

चाँदी के पर्वत समान जिन की श्वेत कान्ति है, जो सुन्दर चन्द्रमा को आभूषण रूप से धारण करते हैं, रत्नमय अलङ्कारों से जिन का शरीर उज्ज्वल है, जिन के हाथों में परशु, मृग वर, और अभय मुद्रा है, जो प्रसन्न हैं, पद्म के आसन पर विराजमान हैं, देवतागण जिन के चारों ओर खड़े होकर स्तुति करते हैं, जो बाघ की खाल पहनते हैं, जो जगत् की उत्पति के बीज और समस्त भयों को हरने वाले हैं, जिन के पाँच मुख और तीन नेत्र हैं, उन महेश्वर का प्रतिदिन ध्यान करें॥

॥ शिव महिमा ॥

हे शिव शंकर जय अभयंकर सुख बरसाने वाले ।

दाता तुम्ही इस भूतल के भक्तों के रखवाले ॥

ॐ नम : शिवाय बोलो ॐ नम : शिवाय,

१- डमरु वादन कर के तुमने भाषा को उत्पन्न किया ।

निर्गुण सगुण रुप आपका भक्तों ने आनन्द लिया ॥

ॐ नम : शिवाय बोलो ॐ नम : शिवाय,

२- प्रथम दिव्य ब्रह्मा को तुमने वेदों का अधिकार दिया ।

चक्र सुदर्शन हरि को देकर सृष्टि का उद्धार किया ॥

ॐ नम : शिवाय बोलो ॐ नम : शिवाय,

३- इन्द्र को दे दी काम धेनु और ऐरावत करिराज दिया ।

सारी बसुधा दी कुबेर को और सारा भण्डार दिया ॥

ॐ नम : शिवाय बोलो ॐ नम : शिवाय,

४- देव सभी को अमृत देकर आप हलाहल पान किया ।

स्वर्ण महल रावण को देकर भक्तों का उद्धार किया ॥

ॐ नम : शिवाय बोलो ॐ नम : शिवाय,

५- मन मोहन को मुरली देकर प्रेप पथ विस्तार किया ।

राम चन्द्र को धनुष बाण से नीति न्याय का दान दिया ॥

ॐ नम : शिवाय बोलो ॐ नम : शिवाय,

६- मुनि नारद को वीणा देकर नव रस को उत्पन्न किया ।

स्वयं ब्यस बन ज्ञान पन्थ का सन्तों को सन्मार्ग दिया ॥

ॐ नम : शिवाय बोलो ॐ नम : शिवाय,

७- योगी बनकर योग मार्ग का तेजोमय आदर्श दिया ।

भोगी बनकर कर्म मार्ग का इस जग को उपदेश किया ॥

ॐ नम : शिवाय बोलो ॐ नम : शिवाय,

८- अलख निरंजन भव भय भंजन भक्तों ने यूँ गान किया ।

मानव दानव देव सभी को मन चाहा वरदान दिया ॥

ॐ नम : शिवाय बोलो ॐ नम : शिवाय,

दुर्गा पूजा एवं स्तुति ॥

॥ दुर्गा का ध्यान ॥

सिंहस्था शशिशेखरा मरकत प्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजैः ।

शङ्खं चक्रधनुःशराश्च दधती नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता ॥

आमुक्ताङ्गदहार कङ्कण रणत्काञ्चीरणन्नूपुरा ।

दुर्गा दुर्गति हारिणी भवतु नो रत्नोल्ल सत्कुण्डला ॥

ध्यानार्थे अक्षत पुष्पाणि समर्पयामि । श्री दुर्गायै नमः ॥

जो सिहं की पीठ पर विराज मान है, जिन के मस्तक पर चन्द्रमा का मुकुट है, जो मरकत मणि के समान कान्ति वाली अपनी चार भुजाओं में शङ्ख, चक्र, धनुष और बाण, धारण करती हैं, तीन नेत्रों से सुशोभित होती हैं, जिन के भिन्न भिन्न अङ्ग, बाँधे हुए बाजूबंद, हार, कङ्कण, खन खनाती हुई करधनी, और रुनझुन करते हुए नूपुरों से विभूषित हैं तथा, जिन के कानों में, रत्न जटित कुण्डल झिलमिलाते रहते हैं, वे भगवती दुर्गा हमारी दुर्गति दूर करने वाली हों ॥

शक्ति के तीन रूप

दोहाः आद्या शक्ति के रूप मे जो रहती निर्गुण रूप ।
भक्तों की रक्षा के लिये जो धरती तीन स्वरुप ।
जय जग जननी जय माहामाया दुर्गा दुर्गति हारी ।
हे अम्बे मात भवानी जय दुर्गा दुर्गति हारी ॥

१- तू ही दुर्गा तू ही लक्ष्मी तेरे रूप अनेक ।
तू ही वाणी रूप बनी है फ़िर भी तू है एक ।
सत्व रजस् और तमो भाव से रहती तू निर्लेप ।
हे अम्बे मात भवानी जय दुर्गा दुर्गति हारी ॥

२- मोह हुआ जब तीन देव मे आकर उन्हे बचाया ।
माहाकाली बन तमोभाव से जीवों को भरमाया ।
तू ही निन्द्रा तू ही माया प्रग्या तू है माहान ।
हे अम्बे मात भवानी जय दुर्गा दुर्गति हारी ॥

३- रजो भाव से माहालक्ष्मी बन चेतन शक्ती जगाइ ।
मात्रि भाव से पाला तू ने जग के जीव सदाही ।

भक्तों मे सद्भाव बुद्धि बन ग्यान प्रभा लहराइ ।

हे अम्बे मात भवानी जय दुर्गा दुर्गति हारी ॥

४- सत्व भाव से माहा सरस्वती ग्यन स्वरूप धरे ।

सारे जग को अन्धकार से क्षण मे मुक्त करे ।

हे ज्वाला हे वैष्णो तू ने लाखों कष्ट हरे ।

हे अम्बे मात भवानी जय दुर्गा दुर्गति हारी ॥

५- जव जव पीर पडी भक्तों पर आकर आन बचाइ ।

शुम्भ निशुम्भ माहाबलि दानव क्षण मे मुक्ती पाइ ।

तू है काली तू है पालक तू ने सृष्टि रचाइ ।

हे अम्बे मात भवानी जय दुर्गा दुर्गति हारी ॥

दोहा ॥ *कहते उसे ही योग जिसमें सर्व दुःख वियोग है ।*

दृढ़ चित हो कर साधने के योग्य ही यह योग है ॥ (गीता)

दोहा ॥ *मुझ से परे कुछ भी नहीं संसार का विस्तार है ।*

जिस भाँति माला में मणी मुझ में गुथा संसार है ॥ (गीता)

सूर्य पूजा एवं स्तुति ॥

॥ सूर्य का ध्यान ॥

रक्ताम्बुजासनम् अशेष गुणैकसिन्धुं । भानुं समस्त जगतामधिपं भजामि । पद्मद्वया भय वरान् दधतं कराब्जै - र्माणिक्यमौलिमरुणाङ्ग रुचिं त्रिनेत्रम् ॥

ध्यानार्थे अक्षत पुष्पाणि समर्पयामि । ॐ श्री सूर्याय नमः ॥

लाल कमल के आसन पर समासीन, सम्पूर्ण गुणों के रत्नाकर, अपने दोनों हाथों में कमल और अभय मुद्रा धारण किये हुए, पद्मराग तथा मुक्ता फल के समान सुशोभित शरीर वाले, अखिल जगत के स्वामी, तीन नेत्रों से युक्त भगवान सूर्यका मैं ध्यान करता हूँ ॥

॥ सूर्य स्तुति ॥

श्लोकः- आदि देव नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्कर । दिवाकर नमस्तुभ्यं प्रभाकर नमोस्तु ते ।

अर्थः- हे आदि देव भास्कर ! आप को प्रणाम । हे दिवस करने वाले तथा प्रकाश के दाता, आप को प्रणाम है । मेरे इस पूजन से आप प्रशन्न होने की कृपा करें ॥

दोहाः- कनक वदन कुण्डल मकर मुक्ता माला अंग ।
पद्मासन स्थित ध्याइये शंख चक्र के संग ।

नमो नमो आदित्य दिवाकर । प्रखर जोतिमय हे भुवनेश्वर ।

१ - तुम हो आदि देव जग पालक । सृष्टि स्थिति के तुम संचालक ।
जगत पूज्य तुम अन्तर यामि । कृपा करो हम पर हे स्वामी ।
नमो नमो आदित्य दिवाकर । प्रखर जोतिमय हे भुवनेश्वर ।

२ - द्वादश नाम प्रसिद्ध तुम्हारे । आधि ब्याधि को मेटन हारे ।
धर्म अर्थ और काम मोक्ष प्रद । रिपु सूदन सद्धर्म गुणाकर ।
नमो नमो आदित्य दिवाकर । प्रखर जोतिमय हे भुवनेश्वर ।

३ - मित्र मरीचि अरूण अरू भानु । सविता सूर्य अर्क खग जानु ।
रवि पूषा आदित्य दिवाकर । जपत मिटें भव रोग निरन्तर ।
नमो नमो आदित्य दिवाकर । प्रखर जोतिमय हे भुवनेश्वर ।

४ - पूर्व दिशा अरूणोदय कारक । पश्चिम गति से तम संहारक ।
सहस्त्र किरण से ज्योति प्रकाशक । चार सृष्टि के तुम हो ईश्वर ।
नमो नमो आदित्य दिवाकर । प्रखर जोतिमय हे भुवनेश्वर ।

५ - षड ऋतु के तुम ही हो स्वामी । प्रज्ञा प्रेरक जलधर दानी ।
जल स्थल नभ गण के हे नायक । दिव्य प्रकाश भरो उर अन्तर ।
नमो नमो आदित्य दिवाकर। प्रखर जोतिमय हे भुवनेश्वर ।

दोहा ॥ *तुलसी मीठे बचन से, सब से मिलिये जाये।*

ना जाने किस भेष मे, नारायण मिल जाये ॥ *तुलसी दास ॥*

भजन ॥

मैं तो तेरा दास प्रभु मुझको भुलाया कैसे।

दीन बन्धु दीना नाथ नाम धराया कैसे ॥

१ - गज को जल बीच जभी गुह ने पकड़ा आकर।

जाय पलक बीच कठिन फंद छुड़ाया कैसे ॥ मैं तो तेरा दास --

२ - द्रौपदी की लाज सभा बिच लेने लगे जभी।

खैंच खैंच हार गये चीर बढ़ाया कैसे ॥ मैं तो तेरा दास --

३ - प्रहलाद को जब बांध के खम्भ से चाबुक मारा।

बनकर नरसिंह दैत्य फाड़ गिराया कैसे ॥ मैं तो तेरा दास --

४ - ध्रुव ने बन जाय जपा तुम्हारा नाम दिल से।

ब्रह्मानन्द कर के दया राम दिलाया कैसे ॥ मैं तो तेरा दास .

शायं कालीन संध्या ॥

शास्त्रों में त्रिकाल संध्या का विधान दिया गया है। प्रातः काल तारों के रहते संध्या करनी चाहिए। मध्यान्ह काल में जब सूर्य मध्य आकाश में हो तथा शायं संध्या सूर्यास्त के पहले कर लेने का विधान है।

आज के व्यस्त जीवन में त्रिकाल संध्या करना सर्व साधारण के लिये कठिन हो गया है। आधुनिक जीवन शैली में यदि त्रिकाल संध्या सम्भव न होने पर प्रातः एवं शायं संध्या अवश्य कर लेनी चाहिये।

यूँ तो सूर्यास्त से पूर्व सायं संध्या करने का नियम है फिर भी सायं काल सभी कार्यों से निवृत हो कर भोजन के पूर्व प्रातः संध्या के विधान से ही शायं संध्या भी कर लेनी चाहिये। प्रातः काल पूर्व दिशा की ओर मुख कर के तथा शायं काल पश्चिम दिशा की ओर मुख कर के संध्या करने का नियम है।

प्रार्थना में बैठने से पूर्व, पूजन तथा आरती की सभी तैयारियाँ कर लें। प्रसाद, भोग भगवन के सामने रख कर प्रार्थना करें।

मंगलाचरण ॥

हरिः ॐ ----- हरिः ॐ ----- हरिः ॐ

- ॐ कारं बिन्दु संयुक्तम् नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
  कामदं मोक्षदं चैव ॐ काराय नमो नमः॥
- गजाननं भूत गणाधि सेवितं, कपित्थ जम्बूफल चारू भक्षणम् । उमासुतं शोक विनाश कारकं, नमामि विघ्नेश्वर पाद पङ्कजम्
- वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समपप्रभ।
  निर्विघ्नं कुरू मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा॥

- नमो देव्यै महा देव्यै शिवायै शततं नमः।

  नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्॥

- नमो ऽस्त्वनन्ताय सहस्र मूर्तये सहस्र पादाक्षि

  शिरोरूवाहवे। सहस्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्र कोटी

  युग धारिणे नमः॥

- सरस्वती नमस्तुभ्यं वरदे काम रूपिणीम्।

  कार्यारम्भं करिष्यामि सिद्धिर्भवतु मे सदा॥

- गुरुः ब्रह्मा गुरुः विष्णुः, गुरुः देवो महेश्वरः।

  गुरुः साक्षात् परंब्रह्म, तस्मै श्री गुरुवे नमः॥

- यं शैवा समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्ति नो।

  बौद्धा बुद्ध इति प्रमाण पटवः कर्तेति नैय्यायिकाः ॥

- अर्हन्नित्यथ जैन शासनरता कर्मेति मीमांसकाः॥

  सो ऽयं वो विदधातु वाँछित फलं त्रैलोक्य नाथो हरिः॥

॥ भोग लगाने का भजन एवं मन्त्र ॥

ब्रह्मार्पणम् ब्रह्महर्वि ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणाहुतम् ।

ब्रह्मैव तेन गन्तव्यम् ब्रह्म कर्म समाधिना ॥

॥ आ ओ भोग लगाओ मेरे भगवन् ॥ २ ॥

दुर्योधन के मेवा त्याग्यो । साग विदुर घर खायो मेरे भगवन ॥

आ ओ भोग लगाओ ----

शवरी के वेर सुदामा के तंडुल । माँग माँग तुम खायो मेरे भगवन ॥

आ ओ भोग लगाओ ----

राधा रानी के मन मे बसगये । औरन को हर्षायो मेरे भगवन ॥

आ ओ भोग लगाओ ----

सूर श्याम बलिहारि चरण की । हृदय कमल में रहो मेरे भगवन ॥

आ ओ भोग लगाओ ----

दोहा ॥ *बड़ा हुवा तो क्या हुवा जैसे पेड़ खजूर ।*

पंछी को छाया नही फल लागे अति दूर ॥ कबीर ॥

जाति ना पूछो साधु की पूछ लीजिये ज्ञान ।

मोल करो तलवार की पडा रहे दो म्यान ॥ कबीर ॥

॥ आरती श्री गणेश जी की ॥

॥ १ ॥ जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा ।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा ॥ जय गणेश -----

॥ २ ॥ एक दन्त दयावन्त चार भुजा धारी ।
मस्तक सिन्दूर सोहे मूसे की सवारी ॥ जय गणेश -----

॥ ३ ॥ पान चढ़े फूल चढ़े और चढ़े मेवा ।
लड्डुअन का भोग लगे सन्त करे सेवा ॥ जय गणेश -----

॥ ४ ॥ अन्धन को आँख देत कोढ़िन को काया ।
बाँझन को पुत्र देत निर्धन को माया ॥ जय गणेश -----

॥ ५ । हार चढ़े फूल चढ़े और चढ़े मेवा ।
सूरश्याम शरण आए सुफल कीजे सेवा ॥ जय गणेश -----

दोहा ॥ *तुलसी भरोसे राम के । निरभय होके सोये ।*
आवत ही हरसे नहीं । नैनन नहीं सनेह । तुलसी दास ॥

तुलसी तहां ना जाइये । कंचन बरसे मेंह ॥
अनहोनी होनी नही । होनी रहे सो होये ॥ तुलसी दास ॥

॥ ॐ जय जगदीश हरे आरती ॥

ॐ जय जगदीश हरे स्वामी जय जगदीश हरे।

भक्त जनों के संकट क्षण में दूर करे॥ ॐ जय जगदीश हरे

जो ध्यावे फल पावे दुख बिनसे मन का।

सुख सम्पति घर आवे कष्ट मिटे तन का॥ ॐ जय जगदीश हरे

मात पिता तुम मेरे शरण गहूं किसकी।

तुम बिन और ना दूजा आश करुँ किसकी॥ ॐ जय जगदीश हरे

तुम पूरण परमात्मा तुम अंतरयामी।

पार ब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी॥ ॐ जय जगदीश हरे

तुम करुणा के सागर तुम पालन करता।

मै सेवक तुम स्वामी कृपा करो भरता॥ ॐ जय जगदीश हरे

तुमहो एक अगोचर सबके प्राण पती।

किस विधि मिलूँ दयामय तुमको मैं कुमति॥ ॐ जय जगदीश हरे

दीन बंधु दुख हरता तुम रक्षक मेरे।

करुणा हस्त बढ़ाओ द्वार पड़ा तेरे॥ ॐ जय जगदीश हरे

विषय विकार मिटावो पाप हरो देवा।

श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ संतन की सेवा॥ ॐ जय जगदीश हरे

तन मन धन सब कुछ है तेरा।

तेरा तुझ को अर्पण क्या लागे मेरा। ॐ जय जगदीश हरे

॥ शिवजी की त्रिगुण आरती ॥

ॐ जय शिव ओंकारा, हर जय शिव ओंकारा।

ब्रह्मा विष्णु सदा शिव, अर्धाङ्गी धारा॥ ॐ जय ----

एकानन चतुरानन, पञ्चानन राजै।

हंसानन गरुड़ासन, वृषवाहन साजै॥ ॐ जय ----

दो भुज चार चतुर्भुज, दस भुज अति सोहै।

तीनों रूप निरखता, त्रिभुवन जन मोहै॥ ॐ जय ----

अक्षय माला वन माला, मुण्ड माला धारी।

चन्दन मृगमद सोहै, भोले शशि धारी॥ ॐ जय ----

श्वेताम्बर पीताम्बर, बाघम्बर अंगे।

सनकादिक गरुड़ादिक, भूतादिक संगे॥ ॐ जय ----

कर मध्ये कमण्डलु, चक्र त्रिशूल धारी।

सुख कारी दुख हारी, जग पालन हारी॥ ॐ जय ----

ब्रह्मा विष्णु सदा शिव, जानत अविवेका।

प्रणवाक्षर के मध्ये, यह तीनों एका॥ ॐ जय ----

काशी में विष्वनाथ विराजत, नन्दो ब्रह्मचारी।

नित उठि भोग लगावत, महिमा अति भारी॥ ॐ जय ----

त्रिगुण स्वामी की आरती, जो कोइ नर गावे।

कहत शिवानन्द स्वामी, मनवांछित फल पावे॥ ॐ जय ----

॥ आरती श्री काली जी की ॥

॥ १ ॥ मंगल की सेवा सुन मेरी देवा। हाथ जोड़ तेरे द्वार खड़े।
पान सुपारी ध्वजा नारियल। ले ज्वाला तेरी भेंट धरे।
सुन जगदम्बे कर न विलम्बे। सन्तन के भण्डार भरे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशहाली। जय काली कल्याण करे॥

॥ २ ॥ बुद्धि विधाता तू जगमाता। मेरा कारज सिद्ध करे।
चरण कमल का लिया आसरा। शरण तुम्हारी आन परे।
जब जब भीर पड़े भक्तन पर। तब तब आप सहाय करे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशहाली। जय काली कल्याण करे॥

॥ ३ ॥ बार बार तैं सब जग मोहयो। तरुणी रूप अनूप धरे।
माता हो कर पुत्र खिलावै। कहीं भार्या बन भोग करे।
संतन सुखदाई सदा सुहाई। सन्त खड़े जय कार करे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशहाली ।जय काली कल्याण करे॥

॥ ४ ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश फल लिए। भेंट देन तब द्वार खड़े।
अटल सिंहासन बैठी माता। सिर सोने का छत्र फिरे।
वार शनिश्चर कुमकुम वरणी। जब लंकुड़ पर हुकम करे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशहाली। जय काली कल्याण करे॥

॥ ५ ॥ खंग खप्पर त्रिशूल हाथ लिए। रक्तबीज कूं भस्म करे।
शुम्भ निशुम्भ क्षणहि में मारे। महिषासुर को पकड़ दले।
आदितवारि आदि की वीरा। जन अपने का कष्ट हरे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशहाली।जय काली कल्याण करे॥

॥ ६ ॥ कुपित होय के दानव मारे। चण्ड मुण्ड सब दूर करे।
जब तुम देखो दया रूप हो। पल में संकट दूर करे।
सौम्य स्वभाव धरयो मेरी माता। जनकी अर्ज कबूल करे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशहाली। जय काली कल्याण करे॥

॥ ७ ॥ सात बार की महिमा बरनी। सब गुण कौन बखान करे।
सिंह पीठ पर चढ़ी भवानी। अटल भवन में राज करे।
दर्शन पावें मंगल गावें। सिद्ध साधन तेरी भेंट धरे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशहाली। जय काली कल्याण करे॥

॥ ८ ॥ ब्रह्मा वेद पढ़े तेरे द्वारे। शिव शंकर हरि ध्यान करे।
इन्द्र कृष्ण तेरी करे आरिती। चमर कुबेर डुलाय रहे।
जय जननी जय मातु भवानी। अचल भवन में राज्य करे।
संतन प्रतिपाली सदा खुशहाली। जय काली कल्याण करे॥

॥ सूर्य देव जी की आरती ॥

जय कश्यप नन्दन ॐ जय अदिति नन्दन।
त्रिभुवन तिमिन निकन्दन भक्त ह्रदय चन्दन ॥ टेक ॥

॥ १ ॥ सप्त अश्व रथ राजित एक चक्रधारी।
दुख हारी सुख कारी मानस मल हारी ॥ जय कश्यप नन्दन --

॥ २ ॥ सुर मुनि भूसुर वंदित विमल विभवशाली।
अध दल दलन दिवाकर दिव्य किरण माली ॥ जय कश्यप नन्दन --

॥ ३ ॥ सकल सुकर्म प्रसविता सविता शुभकारी।
विश्व विलोचन मोचन भव बंधन भारी ॥ जय कश्यप नन्दन --

॥ ४ ॥ कमल समूह विकासक नाशक त्रय तापा।
सेवत सहज हरत अति मनसिज संतापा ॥ जय कश्यप नन्दन --

॥ ५ ॥ नेत्र व्याधि हर सुरवर भू पीड़ा हारी।
वृष्टि विमोचन संतत परहित व्रतधारी ॥ जय कश्यप नन्दन --

॥ ६ ॥ सूर्यदेव करुणाकर अब करुणा कीजै।
हर अज्ञान मोह सब तत्व ज्ञान दीजै ॥ जय कश्यप नन्दन .

॥ आरती अम्बे गौरी जी की ॥

जय अम्बे गौरी मैया जय अम्बे गौरी। (२)

निश दिन तुम को ध्यावत हरि ब्रह्मा शिव जी॥ जय अम्बे -----

माँग सिंदूर विराजत तिको मृग मदको। मैया जय -----

उज्जवल से दोउ नैना चन्द्र वदन नीको॥ जय अम्बे -----

कनक समान कलेवर रक्ताम्बर साजे। मैया जय -----

रक्त पुष्प गल माला कण्ठ हार साजै॥ जय अम्बे -----

केहरी वाहन राजत खडग खप्पर धारी। मैया जय -----

सुर नर मुनि जन सेवत तिनके दुख हारी॥ जय अम्बे -----

कनक कुण्डल शोभित ना साग्रे मोती। मैया जय -----

कोटिक चंद्र दिवाकर सम राजत ज्योती॥ जय अम्बे -----

शुम्भ निशुम्भ बिदारे महिशा सुर धाती। मैया जय -----

धूम्र विलोचन नैना निश दिन मद माती॥ जय अम्बे -----

ब्रह्माणी रुद्राणी तुम कमला रानी। मैया जय -----

आगम निगम बखानी तुम शिव पटरानी॥ जय अम्बे -----

चौसठ योगिनी गावत नृत्य करत भैरों। मैया जय -----

बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरू॥ जय अम्बे -----

तुम हो जग की माता तुम ही हो भरता। मैया जय -----

भक्तन की दुख हरता सुख सम्पति करता ॥ जय अम्बे -----

भुजा चार अति शोभित वर मुद्रा धारी । मैया जय -----

मन वांचित फल पावत सेवत नर नारी ॥ जय अम्बे -----

कंचन थाल विराजत अगर कपूर बाती । मैया जय -----

भाल केतु में राजत कोटिर तन ज्योती ॥ जय अम्बे -----

क्षमा याचना ॥

अब हाथ में फूल लेकर आवाहन के लिये पुष्पांजलिदें ।

❖ कर्पूर गौरं करुणा ऽवतारं संसार सारङ्ग भुजगेन्द्र हारं ।

सदा बसन्तं हृद्यार ऽ विन्दे भवं भवानि सहितं नमामि ॥

❖ त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्व मम देव-देव ॥

❖ कायेन वाचा मनसेन्द्रि यैर्वा । बुद्धयात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात् ।

करोमि यद् यत् सकलं परस्मै । नारायणायेति समर्पयामि ॥

सदा शिवायेति समर्पयामि ॥ जगदम्बिकायेति समर्पयामि ॥

❖ अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम ।

तस्मात् कारूण्य भावेन, रक्ष मां परमेश्वर ।

❖ यानि कानि च पापानि जनमान्तर कृतानि च।

तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिणां पदे पदे॥

❖ पापोऽहं पापकर्माहं पापात्मा पापसम्भवः।

त्राहि मां पुण्री काक्ष सर्वपाप हरो भव॥

❖ नाना सुगंधि पुष्पाणि। यथा कालोद्भवानि च।

पुष्पाञ्जलिः मया दत्तः गृहाण परमेश्वर।

❖ ॐ पूर्णमदः पुर्णमिदं पुर्णात्पूर्ण मुदच्यते।

पूर्णस्य पूर्ण मादाय पूर्ण मेवा वशिष्यते॥

॥ शान्ति पाठ ॥

ॐ द्यौः शान्ति रन्तरिक्ष ः शान्तिः पृथिवि शान्ति रापः शान्ति रोषधयः शान्तिः वनस्पतयः। शान्तिर्विष्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ः शान्तिः शान्ति रेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥ ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः॥

दोहा॥ *ऐसी बानी बोलिये। मन का आपा खोये।*

औरन को शीतल करे। आपहुं शीतल होये॥ *कबीर दास॥*

ज्ञानी से कहिये कहा। कहत कबीर लजाये।

अन्धे आगे नाचते। कला अकारथ जाये॥ *कबीर दास॥*

An introduction of

Hindu Heritage Society Inc.

Sydney, Australia.

In its short history, The Hindu Heritage Society Inc. has come a long way in achieving some of its goals, as laid out in its Aims and Objectives. A legally constituted charitable organisation, with a comprehensive constitution to guide us, our executive members have, with the willing contribution from our members and volunteers achieved a lot of success.

1. Organizing three annual functions for the last few years:
   A - Saraswati Poojan, for our youth
   B - Sanskriti Diwas to promote Hinduism
   C - Devi Pujan for our advance devotees.
2. Divya Darshan – the Societies flagship magazine publication.
3. Our service to community through donations and personal involvement.
4. Associations with other organisations to promote culture and education.
5. Regular religious services by associated members.
6. Regular religious, language and music classes.

Some of the long time aims harbored by our hard working committee are:

1. To be able to serve all persons of Hindu faith, whatever sect or denomination they belong to:
2. Promote Hindu Heritage and Culture within Australia.
3. Establish a Hindu reference library in all capital cities of Australia.
4. Priority based religious service to our members.
5. Farfetched as it may seem, to bring Unity among all members of the Hindu faith.
6. To establish a Community Centre in Sydney (and later in other major cities) for religious / social functions.

We do not rest on our laurels, we still have a long way to go and with the grace of the almighty Lord, we will fulfill our dreams.

HHS publications

The society has published materials as below FREE distribution. All HHS members can get a copy. If you did not get your copy please contact one of us and we will send your copy to you.

Shradhanjali -1

HHS has produced a dual CD for hindi bhajans sung by

Pt. Narayan Bhatt ji and other singers.

It has 18 beautiful bhajans and it's only with $10.00 donation. All donations will go towards Hindu Heritage Society.

Please contact Pt Narayan Bhatt on 0430 338 770.

Or Mr Anand Prasad on 0424 625 588.

- **Saral Bhajnaawali**

A collection of very useful and famous Bhajans, Kirtans, and Aratis

Published in 2007

- **Satya Narayan Vrat Katha**

A unique publication, which contains Katha in DOHA and Chaupai, in Hindi and English. Puja bidhi, Bhajans and Aratis etc. Published in 2006

- **Vishnu Sahastra Naam**

1008 divines names of Lord Vishnu, Puja bidhi, Aarti and much more in this publication. Published in 2006

- **Frequently asked questions about Hinduism part 1**

Around 150 very useful questions and answers. You will find your day to day question and answers in this booklet, (Published in 2005)

- **Our Great Sages**

This special edition of Divya Darshan purports to elucidate brief bibliographies of some of our great sages.

पञ्चदेव पूजन - विशेष जानकारी ॥

पञ्चदेव पूजन में गणपति देवी विष्णु सूर्य और शिव की पूजा की जाती है ॥ यहाँ इन देवी देवताओं के लिये विहित और निषिद्ध पत्र पुष्प आदि का उल्लेख किया जा रहा है।

गणपति के लिये विहित पत्र पुष्प ॥

गणेश जी को तुलसी छोड़ कर सभी पत्र पुष्प प्रिय हैं। अतः सभी अनिषिद्ध पत्र पुष्प इन पर चढ़ाये जाते है। गणपति को दूर्बा अधिक प्रिय है। अतः इन्हें सफेद या हरी दूर्बा अवश्य चढ़ानी चाहिये। दूर्बा की फुन्गी में तीन या पाँच पत्ते होनी चाहिये। गणपति पर तुलसी कभी न चढ़ाये।

पद्म पुराण आचार रत्न में लिखा है कि - **न तुलस्या गणाधिपम् -** अर्थात तुलसी से गणेश जी की पूजा कभी न की जाय। कार्तिक माहात्म्य में भी कहा है कि - **गणेशं तुलसी पत्रै दुर्गा नैव तु दूर्बया** - अर्थात गणेश जी की तुलसी पत्र से और दुर्गा की दूर्बा से पूजा न करें। गणेश को नैवेद्य में लड्डू अधिक प्रिये है।

देवी के लिये विहित पत्र पुष्प ॥

भगवान शंकर की पूजा में जो पत्र पुष्प विहित हैं वे सभी भगवती गौरी - देवी को भी प्रिय है। शंकर पर चढ़ाने के लिये जिन फूलों का निषेध है तथा जिन फूलों का नाम नहीं लिया गया है वे भी भगवती पर चढ़ाये जाते हैं।

आक और मदार की तरह दूर्वा तिलक मालती तुलसी भंगरैया गौर तमाल विहित

प्रतिषिद्ध हैं अर्थात ये शास्त्रों से विहित भी हैं और निषिद्ध भी हैं। विहित प्रतिषिद्ध के सम्बन्ध में तत्तव सागर संहिता का कथन है कि जब शास्त्रों से विहित फूल न मिल पाये तो ऐविहित प्रतिषिद्ध फूलों से पूजा कर लेनी चाहिये।

शिव पूजन के लिये विहित पत्र पुष्प॥

भगवान शंकर पर फूल चढ़ाने का बहुत अधिक महत्व है। बतलाया जाता है कि तप शील सर्व गुण सम्पन्न वेद में निष्णात किसी ब्राह्मण को सौ सुवर्ण दान करने पर जो फल प्रप्त होता है वह भगवान शंकर पर सौ फूल चढ़ा देने से प्राप्त हो जाता है। कौन कौन पत्र पुष्प शिव के लिये विहित हैं और कौन कौन निषिद्ध हैं इन की जान कारी अपेक्षित है। अतः उन का उललेख यहाँ किया जाता है।

पहली बात यह है कि भगवान विष्णु के लिये जो जो पत्र पुष्प विहित हैं वे सब भगवान शंकर पर भी चढ़ाये जाते हैं केवल **केतकी - केवड़े** का निषेद्ध है।

विष्णु पूजन के लिये विहित पत्र पुष्प॥

भगवान विष्णु को तुलसी पत्र बहुत ही प्रिय है। एक ओर रत्न मणि तथा स्वर्ण निर्मित बहुत दे फूल चढ़ाये जायँ ौर दूसरी ओर तुलसी दल चढ़ाया जाय तो भगवान तुलसी दल को ही पसंद करेंगे। सच पूछा जाय तो ये तुलसी दल की सोलहवीं कला की भी समता नहीं कर सकते। भगवान विष्णु को कौस्तुभ भी उतना प्रिय नहीं है जितना कि तुलसी दल मंजरी। काली तुलसी तो प्रिय है ही किंतु गौरी तुलसी तो और भी अधिक य है॥

तुलसी से पूजित शिव लिंग या विष्णु की प्रतिमा के दर्शण मात्र से ब्रह्म हत्या भी दूर हो जाती है। एक ओर मालती आदि की ताजी मालायें हों और दूसरी ओर बासी तुलसी हो तो भगवान बासी तुलसी को ही अपनायेंगे॥

विष्णु भगवान पर नीचे लिखे फूलो को चढ़ाना मना है –

आक; धतूरा; कांची; भटकटैया; चिचिड़ा; कैथ;सहिजन; कचनार; बरगद; गूलर; पाकर; पीपर और अमड़ा॥

वस्त्र – पीला। फूल – पीला। पत्र – तुलसी॥

सूर्य अर्चन के लिये विहित पत्र पुष्प॥

गुंजा (कृष्णला) धतूरा कांची अपराजिता भटकटैया तगर और अमड़ा – इन्हें सूर्य पर न चढ़ाये। वीरमित्रोदय ने इन्हें सूर्य पर चढ़ाने का स्पष्ट निषेध किया है। यथा सभी फूलों का नाम गिनाना कठिन है। सब फूल सब जगह मिलते भी नहीं। अतः शास्त्र योग्य फूलों के चुनाव के लिये हमें एक कसौटी दी है कि जो फूल निषेध कोटि में नहीं हैं और रंग रूप तथा सुगंध से युक्त हैं उन सभी फूलों को भगवान को चढ़ाना चाहिये।

येषां न प्रतिषेधोऽस्ति गन्ध वर्णान्वितानि च।
तानि पुष्पाणि देयानि भानवे लोक भानवे॥

वस्त्र – लाल। फूल – लाल।